राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह की रचनाओं में नारी विमर्श

डॉ0 सुरेन्द्र सिंह, यादव*

यह सत्य है की संसार को गतिशीलता के अक्षय स्रोत का मूल आधार नारी ही हैं जिनके समन्वय द्वारा साहित्य निखरता है। नारी और पुरूष जीवन के स्तम्भ हैं और दोनों के संतुलन पर संसार की प्रगति, संस्कृति, सभ्यता आदि बनती–बिगड़ती है। अतः नारी के अस्तित्व की कदापि उपेक्षा नहीं की जा सकती। राजा साहब ने नारी जीवन के विविध पहलुओं को अपने साहित्य में देखा–परखा है।

राजा साहब ने ईमानदारी से नारी की अत्यन्त व्यापकता को देखते हुए उसके मूल्य का निर्धारण किया है। राजा साहब ने अपने विपुल साहित्य में नारी के विभिन्न रूपों को अत्यन्त सजीव एवं यथार्थ रूप में हिन्दी–पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। जहाँ "राम–रहीम" जिसकी तुलना अँग्रेजी के थेकरे के "बैतिटीफेयर" से की जाती है, की बेला जीवन में करूणा और धर्म में आस्था का नियोजन कर सतत संवेदनशील बनी रहती है, वही बिजली सतत लालसा सक्त नारी का रूप उपस्थित करती है तथा नारी के घृणात्मक पहलू से पाठकों को मिला देती है। "चुम्बन" और चाँटा की नायिका गुलाबी वेश्या होकर भी अपने पावन बलिदान से जीवन का श्रृंगार कर मानवता के शिखर तक पहुँच जाती है। इसी तरह "संस्कार" की विमला नारी के ईर्ष्यालु चरित्र को अत्यन्त यथार्थ रूप में उपस्थित करती है। "चुम्बन और चाँटा" की मालती भी तृष्णाग्रस्त नारी का अत्यन्त स्वाभाविक चरित्र हिन्दी पाठको के समक्ष रखकर संवेदनशील पाठकों को तिलमिला देती है। विमला जहाँ सीमाबद्ध दृष्टिकोण अपना कर जीवन में सदैव घुटती रहती है, वहीं "संस्कार" में अनिल की बहन और माँ नारी के सर्वथा भिन्न पक्षों का उजागर करती है। "सूरदास" उपन्यास की नायिक घनिया और पुरब और पश्चिम "की आंग्ल युवती भीनी नारी के अत्यन्त आलोकपूर्ण रूप को प्रस्तुत कर पुरूष वर्ग के पाठको को चमत्कृत कर देती है। "संस्कार" की विमला जहाँ समाज के संकीर्ण मापदण्ड के कारण अपने दायरे में घुटती रहती है, वही "नारी क्या–एक पहेली" वे और हम" आदि में नारी का अत्यन्त नूतन और सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक पहलू पाठको के सम्मुख उपस्थित होता है। इसी लिए हिन्दी के राष्ट्रवादी महाकवि श्री रामधारी सिंह दिनकर ने अपना अभिमत व्यक्त किया थाः "राजा साहब के साहित्य में हमें नर–नारी के संबंधो की अत्यन्त सरस और उन्मादमयी व्याख्याएँ मिलती है, किन्तु तब की वे शरत बाबू से बिल्कुल भिन्न है, क्योंकि शरत बाबू की नारीपात्रों की हास्यमयता की झाँकी हमें राजा साहब की नारी पात्रों में नहीं मिलती और तब भी

***हिन्दी विभाग ग्राम + पोस्ट–जमुरना जिला–कैमूर भभुआ**

यह ठीक है कि राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह के पात्र हमें कहीं भी निर्जीव नहीं मालूम होते और न उन्हें देखकर हम यही कह सकते हैं कि ऐसे चरित्रों को हमने वास्तविक जीवन में देखा है।

राजा साहब ने अपने साहित्य में शरत की तरह नारी को हृदय प्रधान स्वींकार किया है। "नारी का सर्वस्व हृदय है, विवेक नहीं। उसके जीवन की सार्थकता प्रेम है, संयम नहीं। उन्होनें नारी चरित्रों की गहराई से परख करते हुए उसके विविध नैसर्गिक गुणो ं का भी उद्घाटन किया है। इसके साथ ही उनका स्पष्ट विश्वास है कि "औरत के दिल में जब प्यार उठता है तो वह कलेजा फाड़कर उमड़ता है। उनके सामने सिर्फ मरने–जीने का मसला रह जाता है। उनके नारी पात्र प्रेम की सात्विक प्रेरणा की संतुलन से गरिमा पूर्ण लगते है। पुरूष और नारी की सुधा, चुम्बन और चाँटा के गुलाबी और पूरब और पच्छिम की मीनी आदि के चरित्र को देखें जिनमें प्रेम का अधिष्ठान हैं, परन्तु कामुकता नहीं। वे नारियाँ प्रेम की सात्विकता में पूर्ण विवास रखती है और "जान से नहीं, मान से डरती है। ऐसे आचरण का सफल उदाहरण, सुधा बेला और धनिया है जो अलग–अलग पुरूष और नारी, राम रहीम तथा सूरदास की पात्रायें है। "पुरूष और नारी" में अजीत, स्वार्थान्धता में सुधा को विचलित करने का असफल प्रयास करता रह जाता है, राम–रहीम में धनी पुरूष बेला को पथभ्रष्ट करने की चेष्टा में नितान्त असफल सिद्ध होते हैं। यही तत्व राजा साहब के "सूरदास "चुम्बन और चाँटा" तथा माया मिली न राम" में भी मिलता है। उनकी नारी–पात्राएँ सहनशील और त्याग–सेवा से महिमा–मंडित है।

सिन्दूर की मर्यादा पर सर्वथा समर्पित है, उनमें माँ की पवित्रता और पत्नी कठोर दायित्वमुक्त आलोक एक साथ सशक्त रूप में देखने को मिलता है। "पुरूष और नारी" में, जो राजा साहब की अत्यन्त गम्भीर और सशक्त औपन्यासिक कृति मानी जाती है और जिसमें नारी और पुरूष के मनोवैज्ञानिक संबंधो पर आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि से विचार किया गया है, अतृप्ति की अग्नि से दग्ध अजीत विवाहिता सुधा से अपनी काम–वासना की तृप्ती करने का उपक्रम करता है, तो सुधा निश्छल शब्दों में कहती हैः "स्त्री के जीवन में उसके सिर का सिन्दूर उसकी कितनी बड़ी निधि ा है– आप उसे नही जानते। वह कुछ उसके सिर ही पर नहीं–उसके सर्वस्व पर है। "और वह अपने सतीत्व को कमल–पुष्प की तरह कलंकहीन बनाये रखती है। "वे और हम" में लेखक ने भारतीय नारी के चरित्र के आदर्श और पाश्चात्य देशों की विकृतियों से जर्जर नारी के व्यक्तित्व के इसी अन्तर को अंकित कर श्लाधनीय कार्य किया है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. "दृष्टि" कला भारती, मुजफ्फरपुर राधिकारमण विशेषांक, 1962, पृ॰ 3
2. राम रहीम, लेखक – राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह।
3. टूटा तारा (संस्मरण उपन्यास), पृ॰ 281, लेखक राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह।
4. पुरूष और नारी (उपन्यास) पृ॰ 254, लेखक – राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह।

****